[संचयन] 1 . गिल्लू

लेखिका- महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय

जन्म - सन १९०७

मृत्यु - सन १९८७

रचनाएँ - नीहार , रश्मि , स्मृति की रेखाएँ आदि

पुरस्कार - पद्मभूषण

प्रश्न उत्तर

प्रश्न-१. सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे ?

उत्तर- सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका को उस छोटे जीव की याद आ गई, जो इस लता की घनी हरियाली में छिपकर बैठता था | लेखिका के समीप पहुँचने पर उसे कूदकर चौंका देता था |

प्रश्न-२. पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है ?

उत्तर- कौए को श्राद्ध के दिनों में आदर से बुलाया जाता है, क्योंकि हमारे पुरखे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही आते हैं और साथ ही दूर रहने वाले हमारे परिजनों को अपने आने का संदेश कर्कश स्वर में देता है |

प्रश्न-३. गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया ?

उत्तर- लेखिका ने दो कौओं की चोंच से घायल , गिलहरी के बच्चे को उठा लिया | फिर रुई से रक्त को पोंछ कर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया | लेखिका ने रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर बार-बार उसके मुंह पर लगाई परन्तु उसका मुँह पूरी तरह खुल नहीं पाता था , इसलिए वह पी न सका | तब काफी देर तक लेखिका उसका उपचार करती रही और उसके मुँह में पानी की बूँद

टपकाने में सफल हो सकी | लेखिका के इस प्रकार के उपचार के तीन दिन बाद ही गिलहरी का बच्चा ठीक हो सका |

प्रश्न-४.लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

उत्तर- जब लेखिका लिखने बैठ जाती तो गिल्लू लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करता | वह लेखिका के पैर तक आकार तेज़ी से परदे पर चढ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता | गिल्लू यह क्रिया तब तक करता रहता , जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न दौड़ती |

प्रश्न-५.गिल्लू को मुक्त करने के आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया ?

उत्तर- गिल्लू एक वर्ष का हो गया था |यह उसका पहला बसंत था| बाहर की गिलहरियाँ खिडकी की जाली के पास आकर अपनी भाषा में कुछ कहतीं |गिल्लू जाली में बैठकर उन्हें मज़े से खेलते हुए देखकर उदास हो जाता | उसे मुक्त करने का एक कारण यह भी था कि कुत्ते और बिल्ली आदि से उसकी रक्षा करना भी मुश्किल था | लेखिका ने उसे मुक्त करने के लिए जाली का कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू बाहर आ जा सकता था | बाहर जाकर सचमुच गिल्लू ने मुक्ति की साँस ली |

प्रश्न-६.गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था ?
उत्तर- एक बार लेखिका मोटर दुर्घटना में घायल हो गईं| कुछ दिन अस्पताल में रहकर घर आईं , तब गिल्लू उनके तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें – नन्हें पंजों से लेखिका के सर तथा बालों को इस प्रकार सहलाता रहता , जिस प्रकार कोई सेविका हलके हाथों से मालिश करती है | इस प्रकार लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू ने परिचारिका की भूमिका निभाई |

प्रश्न-७. गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है ?

उत्तर- गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती , अत: गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया था | दिन - भर उसने कुछ न खाया और न बाहर गया | रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतर कर लेखिका के बिस्तर पर आया और ठन्डे पंजों से उनकी वही उंगली पकड़कर हाथ से चिपक गया , जैसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था | पंजे इतने ठन्डे हो गए थे कि लेखिका को हीटर जलाकर उसे गर्मी देने का प्रयास करना पडा , किन्तु कोई लाभ न हुआ और प्रातःकाल होने तक उसकी मृत्यु हो चुकी थी |

प्रश्न-८. "प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया |" का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- जीवन के दो पहलू हैं - जीवन और मरण | एक प्रकार से यह जीवन - परिवर्तन था | वह किसी दूसरे प्रकार के जीवन में जागने के लिए अर्थात मृत्यु के बाद पुनर्जन्म के लिए इस जन्म में हमेशा के लिए सो गया |

प्रश्न-९. सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?

उत्तर- गिल्लू को सोनजुही से लगाव था | वह उसकी सघन छाया में छिपकर बैठता था , इसलिए उसके मरने पर उसकी समाधि सोनजुही की लता के नीचे ही बनाई गई थी | सोनजुही की पीली कलि पुन: खिली थी अर्थात मृत्यु के बाद पुनर्जन्म की कामना मन को संतुष्ट कर रही थी और यह गिल्लू के पुन: लौटने की आशा को जागृत करता है |

--------- समाप्त --------

2. स्मृति

श्री राम शर्मा

लेखक परिचय

जन्म - सन १८९६

मृत्यु - सन १९६७

प्रमुख रचनाएँ - शिकार , बोलती प्रतिमा तथा जंगल के जीव , सेवाग्राम की डायरी

- प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-१. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था ?

उत्तर- सर्दियों की शाम में लेखक अपने साथियों के साथ बेर तोड़ रहा था तभी गाँव के एक आदमी ने पुकार कर कहा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं | तब घर लौटते समय वह डरा हुआ था | उसे समझ नहीं आ रहा था कि उससे कौन - सा कसूर हो गया | उसे आशंका थी कि कहीं बेर खाने के अपराध में उसकी पेशी न हो रही हो | उसे बड़े भाई से मार का डर था |

प्रश्न-२.मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी ?

उत्तर- मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएं में ढेला फेंककर उसकी प्रतिध्वनि सुनना चाहती थी ,परन्तु जैसे ही कुएं में ढ़ेला गिरा, वैसे ही एक फुफकार सुनाई पड़ी | कुएं के किनारे खड़े हुए सब बच्चे उस फुफकार को सुनकर चकित हो गए | उसके बाद सभी ने एक के बाद एक ढ़ेला फेंका और साँप की क्रोधपूर्ण फुफकार सुनाने का मज़ा लेने लगे | इसके बाद ये कार्य रोज करते थे |

प्रश्न-३. 'साँप ने फुफकार मारी या नहीं , ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं ' - यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है ?

उत्तर-यह घटना १९०८ में घटी थी और लेखक ने इसे अपनी माँ को १९१५ में सात साल बाद बताया था | लेखक डाकखाने में चिट्ठियाँ डालने जा रहे थे | रास्ते में कुएं के अंदर ढेला फेंकते समय चिट्ठियाँ कुएं में गिर गई | वे बुरी तरह घबरा गए | उन्हें निराशा , पिटने का डर और घबराहट हो रही थी | इस डर की वजह से उन्हें ठीक से याद नहीं कि जब उन्होंने कुएं में ढेला फेंका तब सांप ने फुफकार मारी नहीं |

प्रश्न-४. किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय किया ?

उत्तर-कुएँ में ढेला फेंकते समय तीनों चिट्ठियाँ कुएं में गिर गई थीं | लेखक को यह चिट्ठियाँ बड़े भाई ने डाकखाने में डालने के लिए दी थीं | यदि वे डाकखाने में नहीं डाली जाती तो घर पर मार पड़ती |सच बोलकर पिटने का भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ तले दबा वह बैठा सिसक रहा था | निराशा , पिटने का भय और उद्वेग से रोने का उफ़ान आता था| चिट्ठियाँ कुएं में गिरी पड़ी थीं | उसका मन कहीं भाग जाने को करता था |झूठ वह बोल नहीं सकता था | देर भी हो रही थी , अत: अंत में उसने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय कर ही लिया |

प्रश्न-५. साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाई ?

५. लेखक धोतियों के सहारे कुएं में उतरा | साँप हमले के लिए तैयार खड़ा था | वहाँ डंडा चलाने की पर्याप्त जगह नहीं थी | उसे एक उपाय सूझा | उसने दोनों हाथों से धोती पकडे हुए अपने पैर कुएं की बगल में लगा दिए , जिससे कुछ मिटटी उस पर गिरी और साँप ने उस पर मुँह मारा |लेखक कुएं के धरातल पर

खड़ा रह गया | तीनों चिट्ठियाँ साँप के पास पड़ी थीं |उसने डंडे से चिट्ठियों को खिसकाना चाहा तो साँप फुंफकारने लगा तो लेखक के हाथ से डंडा छूट गया | अगली बार लिफ़ाफ़ा उठाने पर साँप फुँफकार कर डंडे से लिपट गया | लेखक ने सहमकर डंडा अपनी ओर खींचा और उसे परे पटक दिया | इस बीच उसे चिट्ठियाँ उठाने का मौक़ा मिल गया |

प्रश्न-६. कुएँ में उतारकर चिट्ठियों को निकालने सम्बन्धी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर- भाई द्वारा दी गई चिट्ठियां लेखक से कुएं में गिर गई थीं और उन्हें निकालने के सिवाय और कोई चारा नहीं था , परन्तु कुएं में सांप था , उधर भाई की मार का डर था |इस बीच लेखक ने सांप के डर को साहस से जीतने का निर्णय लिया |वह कुछ धोतियों की सहायता से कुएं में उतरा | सांप फन फैलाए बैठा था | उसने सांप का ध्यान बँटाने की कोशिश की तो साँप डंडे से लिपट गया | सांप का पिछला हिस्सा लेखक के हाथ को छू गया तो उसने डंडा पटक दिया और हिम्मत कर कुएं की मिटटी सांप के एक ओर फेंकी | सांप का आसन बदल गया और लेखक चिट्ठियाँ उठाने में सफल रहा |धीरे से डंडा भी उठा लिया और बाहर भी आ गया | वास्तव में यह एक साहसिक कार्य था |

प्रश्न-७. इस पाठ को पढने के बाद किन-किन बाल सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है ?

७. इस पाठ को पढ़ने के बाद हमें निम्नलिखित बाल -सुलभ शरारतों के विषयों में पता चलता है |

१. घर से छिपकर साथियों के साथ बेर तोड़कर खाना

२. स्कूल जाते समय रास्ते में शरारतें करना

३. कुएँ , तालाब आदि में पत्थर फेंकना

४. जानवरों को तंग करते हुए चलना

५. अपने - आप को सबसे बहादुर समझना और कठिन व् जोखिम पूर्ण कार्य करना आदि |

प्रश्न- ८. 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती है ?

उत्तर- ८.मनुष्य हर स्थिति से निबटने के लिए अपना अनुमान लगाता है | वह अपने अनुसार भविष्य के लिए योजनाएं बनाता है , पर ये योजनाएं हर बार सफल नहीं हो पाती | | कई बार ये झूठी साबित होती हैं | कई बार तो स्थिति बिलकुल उलटी हो जाती है | इस प्रकार मनुष्य की कल्पना और वास्तविकता में बहुत अंतर होता है |

प्रश्न-९. 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' - पाठ के सन्दर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

९. मनुष्य तो कर्म करता है , उसे फल देने का काम ईश्वर करता है |लेखक के भाई की चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गईं | लेखक ने दृढ संकल्प किया कि वह कुएं में घुस कर उन्हें निकालेगा |यह भयंकर निर्णय था | यदि कोई जान-बूझकर या अज्ञानता से मौत का मार्ग चुन ले तो वह अकेला संसार से भिड़ने के लिए तैयार हो जाता है | इस प्रकार दृढ विश्वास रखने पर ईश्वर उसका साथ भी देते हैं | जिस प्रकार लेखक ने साहसिक कर्म किया और ईश्वर ने उसे सकारात्मक फल दिया |

-